

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.

The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक हस्तलिखित संग्रह दाखल क्र <u>M 268 विषय पूजाविस्ति</u> नाव. <u>पुलेसी विवाह विद्</u> रि लेखक/लिपीकार
Checked 2012

शास्त्रायनमः अयत् स्वी विवाद विधाविद्युत्रमने प्रयम् अग्रहावे वाष्ट्रात् स्वाने वास्त्राय जस्तान से त्रश्या स्वायने प्रस् र्ता व्याप्त स्वायने प्रस् र्ता व्याप्त स्वायने स्वायने स्वार्ति का स्वासी नी स्वायने स्वयने स्वायने स्वायने स्वायने स्वयने स्वयने स्वायने स्वयने स्वयन

> मानिसान् विश्व संम्या रणन् श्रास्त्रं रिने से स्व र स्वामान णां पत्र ने सपाय जा ना श्री स्व चा के सी न एं स्या प न विश्व स्वाचित्र में स्वा जा ने स्वस्त मित्र के रात्र में स्ना स्विता मित्र के रात्र में सिना स्विता मित्र के रात्र में सिना स्विता मित्र के रात्र में सिना स्विता मित्र के रात्र में

स्पर्भ प्रमामं स्तानां च प्रद्या । द्वाधनाहरेः पद्यान्य सम्पन्य नि मेत्रण वस्त्र अन्त वस्त्र अन्त वस्त्र भा वध्वम्यक्षयः प्रम्यक्ष सादित्र में ने एक र यह विधाय तम त्त म स्तारमा व ज्ञाहिष्य त्यनगाज्ञा जिनका नगनग माध्याय जे ना विश्व ने विश्व वे-र्गम्य द्रम्य जित्रम्य । र्गम्य निम्नाय जित्राय जित्रम्य ग्रायः जिपसामाय जिल्लामार्शयः अववाय-अवासहयाय-अजानम् श्रम् जेन्न सुनाय जिन्न में नाय जिन जिन किल- अविष्मिनाय • उनिक्रमाय • र्जनगरमाय-र्जम्य-र्जमार्ग य-128 यमानः सपत्रीकः सरीमास् विख्नासद्मविख्नासत्नस्मार्यप

रेवति वन्यः मंतिकाधायान तपावेछा मणः व वं हितान ज्ञायं तिमेग नं गर्भा विका मणः व वं हितान ज्ञायं तिमेग नं गर्भा विका वर् विका वर्षा हित्यं हित

```
[OrderDescription]
,CREATED=16.09.19 11:18
,TRANSFERRED=2019/09/16 at 11:21:07
,PAGES=4
,TYPE=STD
,NAME=S0001804
,Book Name=M-268-TULSI VIVAH VIDHI
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
```